



Հայկական գիտահետազոտական հանգույց Armenian Research & Academic Repository



Սույն աշխատանքն արտոնագրված է «Ստեղծագործական համայնքներ
ոչ առևտրային իրավասություն 3.0» արտոնագրով

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonComercial
3.0 Unported (CC BY-NC 3.0) license.

Դու կարող ես.

պատճենել և տարածել նյութը ցանկացած ձևաչափով կամ կրիչով
ձևափոխել կամ օգտագործել առկա նյութը ստեղծելու համար նորը

You are free to:

Share — copy and redistribute the material in any medium or format

Adapt — remix, transform, and build upon the material

10054

891.99

P-95

Münzfundg.
1905

169

О.Туманянцъ.



ЛЯГУАЛАР

Народная легенда
съ Армянского перев.

К.Бальмонтъ

Рисунки Г.Ерицяна
2003

СБ.1905

Въ пользу
семействъ, пострадавшихъ
въ г. Баку.

89.99

н-95

2011



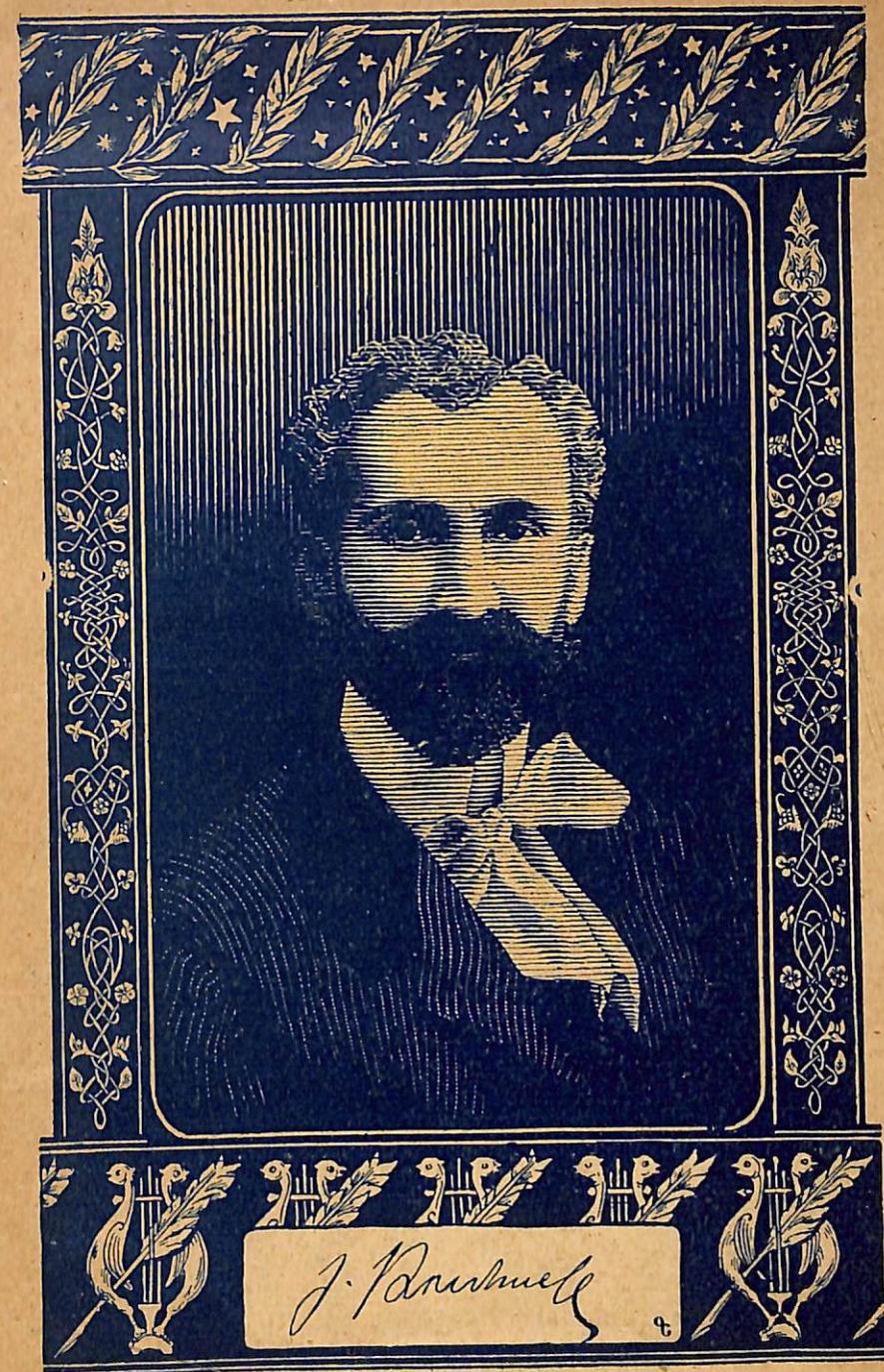
аждой ночью къ водамъ Вана*)
Кто-то съ берега идетъ
И безъ лодки средь тумана
Смѣло къ острову плыветъ;

Онъ могучими плечами
Разсѣкаетъ лоно водъ,
Привлекаемый лучами,
Что маякъ далекій шлетъ.

*) т. е. Ванского озера. Посреди этого озера находится островъ „Ахтамаръ“ съ монастыремъ того же имени.



37068-66



50869-46-4



ԱԽԹՈՎՄԱՐ.



իծաղախիտ Վանայ ծովի
Փռքրիկ գիւղից առափնեայ
Ծովն է մտնում գաղտագողի
Ամեն գիշեր մի տղայ:

Ծովն է մտնում, առանց նաւակ,
Բազուկները առնացի
Ճուրը ճողփում, լող է տալի
Դէպի կղզին դիմացի:

Խաւար կղզուց պարզ ու պայծառ
Մի լոյս կանչում է նըան,
Մի վառ փարոս նըա համար,
Հմոլորի իր ճամբան:

Սիրուն Թամարն ամէն գիշեր
Այնպէս կըակ է անում,
Եւ սպասում է անհամբեր
Այնտեղ՝ մօտիկ՝ դարանում:

* * *

Ծրփում է ծովն ալեծածան,
Ծփում է սիրտը տըղի.
Գոռում է ծովն ահեղաձայն,
Նա կուսում է կատաղի:

Եւ Թամարը սրբտատըռով
Սրդէն լսում է մօտիկ
Զրի ճողփիւն, ու ողջ մարմնով
Սիրուց այրուում է սաստիկ:

Լոեց: Ծովի խաւար ափին
Կանգնեց սև-սև մի ըստւեր...
Ահա և նա... իրար գտան...
Կասկածաւո՞ր լուր գիշեր:...

Միայն ալիքը Վանա ծովի
Մեղմ դիպչում են ափերին,
Հըլհըրելով հեռանում են
Ջըշունջներով անմեկին:



На разсвѣтѣ встали волны
И примчали блѣдный трупъ
И застылъ упрекъ безмолвный
„Ахъ Тамаръ“! средь мертвыхъ губъ.

Съ той поры минули годы
Островъ полонъ прежнихъ чарь,
Мрачно смотритъ онъ на воды,
И зовется „Ахтамаръ“.

К. Бальмонтъ.



Но развѣдалъ врагъ жестокій
Тайну любящихъ сердецъ:
Былъ погашенъ свѣтъ далекій,
Тьмой застигнутъ былъ пловецъ.

Растоптали люди злые
Ярко блещущій костеръ,
Небеса молчатъ ночныхъ,
Тщетно свѣта ищетъ взоръ.

Не заискрится какъ прежде,
Маяка привѣтъ родной,—
И въ обманчивой надеждѣ
Бьется, бьется онъ съ волной.



Вѣтеръ шепчетъ непонятно,
Надъ водой клубится паръ.
И вздыхаетъ еле внятно
Слабый возгласъ: „Ахъ, Тамаръ“!

Звуки плача, звуки смѣха...
Волны ластятся къ скалѣ,
И, какъ гаснущее эхо,
„Ахъ, Тамаръ“! звучить вомглѣ.

Նրանք ասես փսփսում են...
Ու աստղերը կամարից...
Ակնարկելով բամբասում են
Լիրը, անամօթ Թամարից...

* * *

Բամբասում են կուսի սրտում...
Ժամ է արդէն... ու կըկին
Մինն ալեկոծ ծովն է մտնում,
Միւսն աղօթում եզերքին...



* * *

Բայց մի անգամ շարկամ մարդիկ
Նըրանց գաղտնիքն իմացան,
Լոյսը հանգցըին սև ու սաստիկ
Մի մութ գիշեր դիւական:

1891

Մոլորեցաւ խաւար ծովում
Լողորդ տըղան սիրահար.
Ու բերում է հողմը, բերմամ
Հառաշանքներն—«Ա՛խ, Թամար...»

Մօտ է ձայնը, խօլ խաւարում,
Ժայռերի տակ սեպացաց,
Ուր ամենի ծովն է գոռում,
Մերթ կորչում է խլացած
Ու մերթ լըստում ուժասպառ,
«Ա՛խ, Թամար»

Առաւոտեան ծովը ծըփաց:
Ափը ձգեց մի դիակ,
Նըրա շուրթին, պաղ, կարկամած,
Ասես, մեռած ժամանակ
Սառել էին երկու բառ.
«Ա՛խ, Թամար...»

Այն օրւանից սըրա համար
Կղզին կոշւեց «Ախթամար»:





Тихо, только волны плещутъ,
Только полны чистыхъ чаръ,
Звѣзды ропщутъ и трепещутъ
За безстыдную Тамаръ.

И опять къ пучинамъ Вана
Кто-то съ берега идетъ
И безъ лодки средь тумана
Вдаль отъ острова плыветъ.

И со страхомъ остается
Надъ водой Тамаръ одна,
Смотрить, слушаетъ какъ бьется
Разъяренная волна.

Завтра—снова ожиданья,
Такъ-же искрится маякъ
Тотъ же чудный мигъ свиданья,
Тѣ-же ласки, тотъ-же мракъ.



Вкругъ потокъ, шипя, крутится
За пловцомъ бѣжитъ во слѣдъ,
Но безстрашный не боится
Ни опасностей, ни бѣдъ.

Что ему угрозы ночи,
Пѣна, волны, вѣтеръ, мракъ?
Точно любящія очи,
Передъ нимъ горитъ маякъ.

Каждой ночью искры свѣта
Манятъ лаской тайныхъ чаръ;
Каждой ночью, тьмой одѣта,
Ждетъ его къ себѣ Тамаръ. *)

И могучими плечами
Бороздить онъ лоно водъ,
Привлекаемый лучами,
Что маякъ далекій шлетъ.

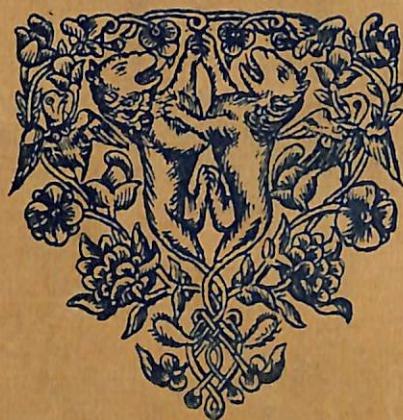
Онъ плыветъ на встрѣчу счастью,
Смѣло борется съ волной
А Тамаръ, объята страстью,
Ждетъ его во тьмѣ ночной.

Не напрасны ожиданья...
Ближе, ближе... вотъ и онъ!
Мигъ блаженства! мигъ свиданья,
Сладкихъ таинствъ райской сонь!

*) Тамарь—армянская форма женского имени Тамара.

204.

10057



Цѣна 25 коп.

Дозволено цэнзурою. С.-Петербургъ, 10 марта 1905 года,

„Пушкинская Скоропечатня“, Лешуковъ, 4.

2013

